International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 8 Issue 10, October 2018,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com Double-Blind
Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

निराला की कहानियों में यथार्थ–चित्रण

डॉ. सुधांशु कुमार
हिन्दी शिक्षक,
सिमुलतला आवासीय विद्यालय, सिमुलतला (जमुई)–811316

एक कवि के रूप में साहित्य जगत में सुप्रतिष्ठित होने के बाद कथा–साहित्य के क्षेत्र में महाप्राण निराला का आगमन बीसवीं सदी के तीसरे दशक में हुआ। उस समय तक प्रसाद एवं प्रेमचन्द जैसे साहित्य–साधकों के कथा–साहित्य की यशगाथा फैल चुकी थी। इसी समय अपने गद्य–में अभिव्यक्ति हेतु निराला ने निबंध, कहानी एवं उपन्यास आदि विधाओं के लेखन क्षेत्र में कदम रखा। कथा–साहित्य में निराला के आगमन तक चिन्तन–पद्धति और शैली शिल्प की पर्याप्त भिन्नता के बावजूद जयशंकर और प्रेमचंद जैसे अनुपम रत्न हिन्दी साहित्य संसार को प्राप्त हो चुके थे। प्रसाद प्रांजल भाषा–शैली, इतिहास–प्रेमी और भावुकता से परिपूर्ण कलाकार थे, तो प्रेमचंद अपने समसामयिक जीवन और समाज, यथार्थवादी चिन्तन तथा सामान्यजन–भाषा की आधारभूमि पर रचना करने वाले कथाकार थे।

सामाजिक मानव की समान्य और विशिष्ट परिस्थतियों, मनोवृत्तियों और समस्याओं का अंकन करते हुए प्रेमचंद ने हिन्दी कहानी को एक निश्चित यथार्थवादी दिशा और गति प्रदान की। सच यह है कि प्रेमचंद ने हिन्दी कहानी को सभी बाहरी प्रभावों से मुक्त करते हुए स्वावलंबी बनाया। सामाजिक समस्याओं का प्रकाशन, कला और विचार, भाषा और कथ्य इन सभी का संतुलित समन्वय प्रेमचंद की कहानियों से पूर्व नहीं मिलता। इस दृष्टि से प्रेमचंद की कहानी–कला हिन्दी कहानी के लिये क्रांतिमय एवं समकालीन तथा परवर्ती कहानीकारों के लिए प्रेरणा का प्रधान स्रोत थी। उनके साहित्य का प्रधान उद्देश्यच था जीवन का सच्चा, यथार्थ चित्रण कर जनता में जागरण का संदेश देना। ''सबसे महत्वपूर्ण यह कि उन्होंने जनता की बात को जनता की बोली में कहा। उन्होंने यथार्थवादी दृष्टिकोण के अनुरूप कहानी के शिल्प में भी नवीनता और स्वाभाविकता का समावेश किया था।''1

प्रेमचंद और प्रसाद की इसी समृद्ध परम्परा में सुदर्शन, आचार्य चतुरसेन शास्त्री, वृंदावन लाल वर्मा, पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र', सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला', विश्वम्भरनाथ शर्मा 'कौशिक', इलाचन्द्र जोशी, जी.पी. श्रीवास्तव आदि कहानीकारों ने हिन्दी साहित्य की गौरव वृद्धि की। चौथे दशक में आकर हिन्दी साहित्य व्यक्तिवादी एवं समाजवादी विचारधाराओं के सभी प्रभावों को आत्मसात करती हुई नये युग में प्रवेश करती है। परिवर्तन के इस 'संक्रातिकाल' में मनोविश्लेषणवादी चित्रण एवं समाजवादी चित्रण के विकास से हिन्दी कहानी समृद्ध होने लगी। समाजवादी विचारधरा का एक वर्ग साम्यवादियों का था जो शोषण और अत्याचार के विरुद्ध आवाज उठाते हुए हिंसा में भी विश्वास रखता है, जबकि दूसरा वर्ग साम्यवादी न होकर भी समाज के यथार्थ चित्रण के कारण समाजवादी माना गया। प्रेमचंद इसी दूसरे वर्ग की परम्परा के प्रतिनिधि माने गये, जिसमें समाज का संवेदनशील यथार्थ चित्रण हुआ है। अश्क, नागर और निराला इसी वर्ग के कहानीकार के रूप में प्रतिष्ठत हुए। 'यद्यपि इनकी कहानियों में शोषण, अत्याचार, विषमता, विकृति आदि के विरोध के साथ समाज का यथार्थवादी चित्रण हुआ है किन्तु विषम परिस्थितियों के निराकरण खोजने में ये असफल रहे। इसी कारण इन्हें प्रगतिशील मान सकते हैं, परन्तु साम्यवादी नहीं।''2

निराला की कहानियों में जीवन के यथार्थ बोलते हैं, उनमें सत्य चित्रों का स्पष्ट अंकन है। सामाजिक, राजनैतिक तथा आर्थिक विषमताओं को चित्रित करने का निराला ने सफल प्रयास किया है। उनमें देखे और अनुभव किये गये मन का दर्द, क्षोभ और आक्रोश व्यक्त हुआ है। कथाकार निराला ने कथा–साहित्य को संसार में कर्मों से थके हुए मनुष्य के लिए मनोरंजन का साधन माना, जिनमें जीवन के अनेकानेक चित्र यथार्थ रूप में झाँकते हैं, इनमें यही आकर्षण का कारण होता है। 'हमारा कथाकार साहित्य'

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 8 Issue 10, October 2018,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com Double-Blind
Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

शीर्षक लेख में वे लिखते हैं–''संसार में कर्मों से थके हुए मनुष्य प्रायः कहानी, उपन्यास ही मनोरंजन के लिए संद करते हैं। चूंकि जीवन की यथार्थ छाप इस साहित्य में अनेकानेक चरित्रों के भीतर अनेकानेक रूपों में रहती है, इसीलिए दूसरे साहित्यों की अपेक्षा उसके प्रति आकर्षण खासतौर से होता है।''3 स्पष्ट है कि निराला के आरंभिक समय की कहानियाँ जहाँ मनोरंजनकारी हैं, वहीं दूसरे दौर की कहानियों में यथार्थ जीवन जीवंत हो उठा है। 'देवी' और 'श्यामा' कहानी इसके प्रमुख उदाहरण हैं।

निराला के तीन कहानी–संग्रह हैं। 'लिली', 'सखी' और 'सकुल की बीबी'। 'चतुरी चमार' और 'देवी' नये अथवा स्वतंत्र संग्रह नहीं है। 'चतुरी चमार', 'सखी' का ही नया नाम है और 'देवी' में विभिन्न संग्रहों की चुनी हुई कहानियाँ संकलित हैं। ''उपन्यासों की तुलना में कहानियों में कल्पना और यथार्थ का अन्तर्विरोध अधिक तीखा है। 'श्यामा' कहानी इसका सर्वोत्तम उदाहरण है जिसमें किसान सस्म्पूर्ण उत्पीड़न के साथ पहली बार उपस्थित होता है।''4

निराला सामंत विरोधी प्रखर जनवादी चेतना के लेखक थे। 1940 ई. के बाद लिखे अपने गद्य साहित्य में वे छायावादी कल्पना लोक की रंगीन दुनिया से नीचे उतरकर यथार्थ की ठोस भूमि पर आ खड़े होते हैं, और तब, 'देवी', 'हिरणी', 'अर्थ', 'चतुरी चमार' और 'राजा साहब को ठेंगा' जैसी कहानियाँ हिन्दी साहित्य के लिए बेमिशाल बन जाती है। 'चतुरी चमार' की भूमिका में निराला लिखते हैं–''मैंने स्थायी साहित्य सर्जन के विचार से ये कहानियाँ लिखीं हैं।..... भाषा, भाव और विषय के विवेचन में कहानियों के साथ पाठकों का मन पुष्ट होगा।''5

वस्तुतः निराला की कहानियों में गहरे व्यंग्य का चोट अधिक प्रभावी है। इस कारण कहानी के उद्देश्य की दृष्टि से इनमें कथांथ अपेक्षाकृत कम होता है। भावात्मक एवं सांस्कृतिक चेतना के साथ रस संचार तो होता है पर कहानी में कहानी में कौतूहल की परितुष्टि नहीं हो पाती। 'देवी' कहानी के व्यंग्य की धार से प्रभावित हो डॉ. रामविलास शर्मा लिखते हैं–''देवी का व्यंग्य इतना प्रभावपूर्ण इसलिए है कि उसका लक्ष्य व्यक्ति विशेष नहीं है वरन् वह सामाजिक व्यवस्था है, जिसमें मुफ्तखोर पूजे जाते हैं और जिन्हें पूजना चाहिए, वे ठोकरें खाते हैं। यहाँ पर निराला जी ने भारतीयता के नाम पर जो अन्याय लीला होती है, उसी हकीकत बयान कर दी हैं धर्म, राजनीति, समाज सुधार देखने में बड़े सुन्दर शब्द हैं, लेकिन इनकी आड़ में न जाने कितने लोग अपनी स्वार्थ साधना में लगे हैं। निराला ने निराला ने दिखाया है कि वही राजनीति सफल होगी, जिसमे देवी जैसी स्त्रियाँ समाज से वहिष्कृत होकर होटल की जूठन की मोहताज न रहेंगी। वह धर्म नष्ट हो जायेगा जो इस तरह की सामाजिक विषमता को यह कहकर सहन कर लेता है कि अपने–अपने कर्मों का फल है, किसी के बाँटे घी–शक्कर है और किसी को एक जून नमक और चना भी नसीब नहीं है।''6

देवी एक अतिसाधारण पगली स्त्री है, उसके जाग्रत मातृत्व भावना के आगे कवि का अहंकार क्षुद्र मालूम होता हैं। पगली का जीवन कवि पर ही नहीं, समाज के नेताओं, उनके संचालकों, उसकी संस्कृति, कला और साहित्य सभी पर एक तीखा व्यंग्य बन जाता है। कहानी कला की दृष्टि से निराला की कहानियाँ भले ही उतनी सुदृढ़ न मानी गयी हों किन्तु सामाजिक यथार्थवादी दृष्टि से उनकी कहानियाँ अमूल्य हैं। ऐसे ही साहित्य की जड़ें देश और समाज में गहराई तक फैलती हैं। इनकी कहानियों की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि वे समाज व्यवस्था, धर्म, राजनीति, शोषण, अन्याय, अत्याचार आदि पर मर्यादा पर अतिक्रमण किये बिना भयंकर प्रहार करती है। यही निराला की कहानी कला की महानता और विशिष्टता है। डॉ. लक्ष्मीनारायण के शब्दों में–''इनकी कहानियों में मुख्यतः भाव–पक्ष की अतुल सम्पत्ति है, कला–पक्ष की नहीं। ... इनकी कहानियाँ इस अर्थ में उत्कृष्ट हैं कि ये समाज के सभी पक्षों को छूती हैं, विशेषकर उन तीरों को जहाँ शोषण है, संघर्ष है। इनकी कहानियाँ मार्मिकता और संवेदना के सहारे मनोविश्लेषण और अध्ययन में जितनी सफल हुई हे, उतनी ही सफलता उन्हें इस सत्य की प्रतिष्ठा में मिली है कि मानव जीवन अपनी समस्त सीमाओं और संघर्षों के रहते महान और सुन्दर है।7

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 8 Issue 10, October 2018,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com Double-Blind
Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

विषय के अनुरूप ही इन कहानियों में निराला ने कहानी का नया रूप आविष्कृत किया है। इन कहानियों में उनका गद्य अनावश्यक साज–सँभार से मुक्त होकर नई दीप्ति के साथ सामने आता है। उसें जितनी कसाब है, उतना ही पैनापन। निराला के गद्य की अन्यतम विशेषता है हास्य। उसमें हास्य के कलकल के नीचे प्रायः करुणा और आक्रोश की धारा बहती रहती है।

नारी मुक्ति का प्रखर उद्घोष निराला की कहानियों में स्पष्ट है। 'श्यामा' में विधवा उद्धार की बात हो या 'कमला' में अबला उद्धार का पक्ष हो या फिर 'देवी' में उसके प्रति सहानुभूति की दृष्टि हो–संसार चाहे जो समझ या देखे–निराला को मानवता को जीने से कोई वंचित नहीं कर सकता। नारी की तरह अस्पृश्यों को भी निराला अपनी खुली दृष्टि का भाजन बनाते हैं। उनी रचनाकार चेतना को चतुरी चमार झकझोरता है, वे सोचते हैं–''वह एक ऐसे जाल में फँसा है जिसे वह काटना चाहता है–भीतर से उसका पूरा जोर उमड़ रहा है, पर एक कमजोरी है जिसमें बार–बार उलझ कर रह जाता है।''8

वस्तुतः 'देवी', 'श्यामाल', 'चतुरी चमार', 'कुल्टी भाट' और 'बिल्लेसुर बकरिहा' में अनुभव गोचर होने वाली मानवीय भावना जिस स्वर में फूटती है, जिनके बीच फूटती है–जिन दलितों के परिवेश में फूटती है–उसके लिए सहज मानवीय ह्रदय का होना ही पर्याप्त हे, किसी विशेष आलोक में अन्यान्य व्याख्या की अपेक्षा नहीं।''9

निष्कर्षतः निराला की विश्वदृष्टिकार समग्र मूल्यांकन करें तो स्पष्ट हो जाता है कि उनके पद्य साहित्य की अपेक्षा इन कहानियों एवं उपन्यासों का स्वर बिना किसी आवरण के यथार्थ का स्वर है, जिसकी समझ और व्याख्या के लिए किसी विशेष दर्शन की अपेक्षा नहीं बल्कि उसे मानवता के आलोक में ही समझा जा सकता है।

संदर्भ :

1. हिन्दी कहानी का सफर, डॉ. रमेशचन्द्र साहा, पृ. 57.
2. वही, पृ. 66.
3. हमारा कथा साहित्य, निराला रचनावली, भाग 5, पृ. 515.
4. भूमिका, निराला रचनावली, भाग 4, पृ. 14.
5. 'चतुरी चमार' की भूमिका, निराला रचनावली, भाग 4, पृ. 429.
6. निराला, राजनाथ शर्मा, पृ. 229.
7. हिन्दी कहानी का सफर, डॉ. रमेशचन्द्र साहा, पृ. 69.
8. 'चतुरी चमार' निराला रचनावली, भाग 4, पृ. 365.
9. महाप्राण निराला, पुनर्मूल्यांकन, आचार्य राममूर्ति त्रिपाठी, पृ. 46.